बहेड़ा में पाये जाने वाले तत्व

	गूदा	गुठली
आर्द्रता	8.00	11.35
राख	4.28	4.38
पेट्रोलियम ईथरसत्व	0.12	29.82
ईथरसत्व	0.41	0.61
एल्कोहोलिक सत्व	6.42	0.62
जलीय सत्व	38.56	25.26

मुद्रक : फाईन आर्ट प्रिन्टर्स, जाटवाड़ी, उदय. फो.: 0294-2411406, 94602 64241

बहेड़ा

स्याही वाला वृक्ष

वैज्ञानिक नाम
टर्मिनेलिया बेलेरिका

राजस्थान वन उपज संग्राहक एवं प्रशोधक समूह समर्थक समिति
282, पुराना चुंगीनाका, फतेहपुरा, उदयपुर (राज.)
फोन एवं फैक्स : 0294-2451478
email: samarthak@sancharnet.in
Website: www.samarathak.org

बहेड़ा

संस्कृत नाम : विभीतक, बहेडक, कर्षफल, कल्पद्रुम

हिन्दी : बहेड़ा

गुजराती : बेहेड़ा, बेरंग

मराठी : बेहड़ा

अंग्रेजी : बेलेरिक माइरोबैलन (ठमसमतपब डलतवइंसंद)

लेटिन : टर्मिनेलिया बेलेरिका (ज्मतउपदंसपं ठमसमतपबं)

प्राप्ति स्थान :
भारत, बर्मा, लंका के जंगलों में सर्वत्र हिमालय की तलहटी में, अवध के जंगल, शिवालिक शैल पर, सिन्धु नदी के किनारे, कोयम्बटूर, गोरखपुर।

परिचय
बहेड़ा साधारण वृक्ष है, इसका पेड़ दूर से ही पहचाना जा सकता है। पूर्णतया बढ़ा हुआ वृक्ष सुन्दर दिखाई देता है। यह 50 से 100 फीट तक ऊँचा चलता है।

वृक्ष की छाल नीलाभ या राख के जैसे रंग की भूरी एक तिहाई इंच मोटी, लम्बाई के रूख में अनेक सूक्ष्म दरारों वाली और अंदर से पीले रंग की होती है। लकड़ी सख्त पीताभ घूसर, पत्रवृन्त पत्ते की एक तिहाई लम्बाई से बड़े डेढ़ से तीन इंच लम्बा होता है। पत्ते में मुख्य बाह्य नाड़ियाँ मध्य पसली के दोनों पार्श्वों में पाँच से आठ होती हैं। फरवरी-मार्च में पत्ते गिर जाते हैं।

अप्रैल में ताम्र या चर्म वर्ण के नये पत्ते निकलते हैं। हरी आभा लिये हुए सफेद या पीले फूलों के स्तवक, कोमल तीन से 6 इंच लम्बे चलने वाले साल की नवीन शाखाओं पर लगे हुए या गिरे हुए पत्तों के अक्षों से निकलते हैं। इनमें मधु सदृश तीव्र गंध आती है जो प्राय: समय-समय पर अत्यधिक उग्र हो जाती है और तेज बदबू मालूम होने लगती है। पुरुष और मादा फूल मिले हुए होते हैं।

फल नवम्बर से फरवरी तक पकते हैं और शीत तथा ग्रीष्म ऋतु में गिर जाते हैं। फल शुष्क गूंदे वाला एक डेढ़ इंच लम्बा अण्डाकार, भूरे मखमली मुलायम और चिकने रोओं से ढका हुआ और पाँच अस्पष्ट रेखाओं वाला होता है। गुठली के अंदर मिठी तैलीय गिरी रहती है। बीज की उगने की शक्तिअच्छी है। नर्सरी में मार्च या अप्रैल में बाया जाना चाहिए, मिट्टी से ढक कर नियमित पानी देने पर सामान्यतया बोने से एक-दो माह में अंकुरोप्राप्ति हो जाती है।

उपयोगी अंग
फल का छिलका, फल का गूदा, बीज की गिरी और फल उपयोगी होते हैं।

संग्रह :
नवम्बर से फरवरी माह तक फल पकते हैं। पूर्व पक्व होने पर फलों को वृक्ष पर से उतार कर सुखाकर ठण्डे शुष्क स्थान पर रखें।

गुण :
बहेड़ा हलका, गरम, रूक्ष, तीक्ष्ण और कामस्तिनाशक/कृमिनाशक है। इसमें कषाय रस का प्रतिपादन सब लेखकों ने किया है। बहेड़ा हलका, गरम, रूक्ष, तीक्ष्ण और कामस्तिनाशक/कृमिनाशक है। इसमें कषाय रस का प्रतिपादन सब लेखकों ने किया है। बहेड़ा कठोर मल का भेदन कर उसका अनुलोमन करता है। खांसी में लाभ दिलाता है। बहते हुए खून को बंद करता है। आँखों के लिए हितकर है। बालों को पकने से रोकने और बालों को विशेष रूप से बढ़ाने के गुणों के कारण बालों के लिए लाभदायक, कृमिनाशक है।

रासायनिक संगठन :
फल के अन्त:भाग में केवल 1.25: टैनिक ऐसिड होता है। बाह्य भाग में 6.70: गैलोटैनिक ऐसिड होता है।

औषधिय उपयोग :
खांसी, कण्ठव्रण, गले का बैठ जाना आदि में मुख में रखकर चूसने से आराम मिलता है। सैंधव नमक, पिप्पली और बहेड़ा का चूर्ण को मक्खन में मिलाकर चाटने से आराम मिलता है। बहेड़े और असगंध के समान भाग चूर्ण में गुड़ मिलाकर गरम जल से खाने से हृदयगत वायु नष्ट होती है।

मुनक्का, इलायची का चूर्ण और बहेड़े की गिरी की बनाई गोली वमन में बहुत लाभकारी होती है।

स्याही :
भारत और जावा में फल से देशी स्याही बनाई जाती है। इसके लिए ताजे फल इस्तेमाल